

खिलौने सीखने की नींव विकसित करने में मददगार

पद्मा यादव*

खेलना बच्चों का स्वभाव है। खिलौना ऐसी वस्तु है जिससे खेलकर बच्चे आनंद का अनुभव करते हैं। खिलौनों को अक्सर बच्चों से संबंधित समझा जाता है लेकिन बड़े लोग यानि अभिभावक और शिक्षक भी इनका प्रयोग करते हैं। भारत में खिलौनों का प्रयोग अति प्राचीन है और सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेषों से भी यह प्राप्त हुए हैं। हर बच्चे को खिलौना प्रिय होता है। खिलौने बच्चे के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा होते हैं। बच्चों के पास जो कुछ भी हो, चाहे वह पत्थर हो, पत्ता या तिनका हो, वे उसे उठा कर खेलने लगते हैं। खेल उन्हें बहुत प्यारा लगता है। खेलने से उन्हें आनंद मिलता है और बच्चों के लिए खेलना ही सीखना है। इस लेख के माध्यम से यह समझने की कोशिश की गई है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में कौन-कौन से खिलौने प्रयुक्त होते हैं और खिलौनों पर आधारित शिक्षण कैसे होता है? सीखने की नींव विकसित करने में खिलौने कैसे मददगार हैं?

खेलना बच्चों को बहुत पसंद होता है। खेत हो, घर हो, बाज़ार हो, रेलवे स्टेशन हो या कोई भी स्थान हो बच्चे किसी भी वस्तु से खेलने लगते हैं और वही वस्तु उनके लिए खिलौने बन जाती है। खिलौने कई प्रकार की चीज़ों से बने होते हैं, जैसे— प्लास्टिक, लकड़ी, कपड़े इत्यादि। बहुत पहले ज़्यादातर माता-पिता बच्चों को खेलने के लिए लकड़ी के खिलौने देते थे। लकड़ी के खिलौने आज भी प्रचलित हैं। लकड़ी के खिलौने अच्छे और टिकाऊ होते हैं। खिलौना खेलने के दौरान, बच्चे खिलौने को अपने मुँह में रख लेते हैं। अच्छी लकड़ी के खिलौने में कोई रासायनिक पदार्थ नहीं होता है, बच्चा खिलौना मुँह में रखेगा तो नुकसान नहीं होगा। ज़मीन पर गिरने से लकड़ी के खिलौने

जल्दी टूटते नहीं हैं। प्लास्टिक के खिलौने ज़मीन पर गिर जाए तो क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। लकड़ी के खिलौने आसानी से अलग-अलग हो जाते हैं। इन्हें अलग करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल है। इनका मनचाहे ढंग से संगठन हो सकता है, जैसे बिल्डिंग ब्लॉक में होता है। बच्चे बिल्डिंग ब्लॉक को पसंद करते हैं क्योंकि इसमें वे अपनी कल्पना का प्रयोग करते हैं। बच्चे बिल्डिंग ब्लॉक का विभिन्न प्रकार से विभिन्न रूपों में निर्माण कर सकते हैं। इससे बच्चों की छोटी माँसपेशियों का विकास होता है इसके साथ ही उनकी आँख और हाथ का तालमेल विकसित होता है साथ में उनकी रचनात्मकता बढ़ती है। गुड़िया और बिल्डिंग ब्लॉक जैसे परंपरागत खिलौनों की लोकप्रियता अब भी बनी

* प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरबिंदो मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

हुई है। नए-नए खिलौने आ जाने के बाद भी परंपरागत खिलौनों की माँग कम नहीं हुई है।

एक खिलौने को तीन चीजें महत्वपूर्ण बनाती हैं, उसका सामाजिक महत्व (जिससे बच्चों में सामूहिकता की भावना का विकास हो), उसका बहुमुखी होना (जिससे उसका सृजनात्मक प्रयोग किया जा सके) और उसका टिकाऊ होना (जिसे बच्चा कई साल तक उसका प्रयोग कर सके)। खिलौनों के कई फायदे हैं, ये बच्चों को सृजनात्मकता, मनोरंजन और शिक्षा तीनों प्रदान करते हैं। सृजनात्मक खिलौने बच्चों के लिए बेहतर होते हैं। भारत में खिलौनों के संग्रहालय भी हैं।

आजकल इलेक्ट्रॉनिक खिलौनों की लोकप्रियता में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी हुई है। कई बार देखा गया है कि बच्चों को खिलौनों की उतनी ज़रूरत नहीं होती जितनी उन्हें अपने व्यस्त माता-पिता की होती है। बच्चे माता-पिता के साथ खेलना, घूमना, बातें करना और गुणवत्तापूर्ण समय बिताना चाहते हैं। खिलौनों के अलावा भी बच्चों के पास खेलने-कूदने के ढेरों दूसरे तरीके होते हैं।

खिलौने बच्चों में तनाव को कम करते हैं। बच्चों की मासूमियत सभी को अच्छी लगती है। छोटे बच्चों की शरारत देखकर हमें भी अपना बचपन याद आ जाता है। बच्चों के लिए खिलौने खरीदते हुए माता-पिता के अंदर का बच्चा भी बाहर आ जाता है। वे भी बच्चे के साथ बच्चा बन जाते हैं। छोटे बच्चों के लिए अच्छे खिलौने उनके विकास और उभरती क्षमताओं के लिए उपयोगी हैं। माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार बच्चे को खिलौना खरीद कर देते हैं लेकिन छोटे बच्चों को अकसर नया खिलौना चाहिए होता है। बच्चों के पास जो खिलौने होते हैं उनसे उनका मन जल्दी ही भर जाता है। बच्चे खिलौना

तोड़-फोड़ कर, उसके अन्दर क्या है, आवाज़ कैसे आ रही है, देखना चाहते हैं। इसीलिए खिलौने जल्दी खराब भी हो जाते हैं। माता-पिता के लिए यह समस्या हो जाती है कि रोज-रोज बच्चों के लिए खिलौना कहाँ से खरीदें और क्या खरीदें? यह ज़रूरी नहीं कि बच्चे के लिए खिलौने केवल बाज़ार से ही खरीदे जाएँ, घर में पड़े बेकार सामान से भी खिलौने बनाए जा सकते हैं। खिलौने कई चीजों से बनाए जा सकते हैं, जैसे— माचिस, कागज, बटन, कपड़े, ढक्कन आदि। खिलौने बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। *सॉफ़्ट टॉयज*, *रिंग्स*, गेंद इत्यादि के साथ बच्चों को खेलना बहुत पसंद होता है। जब बच्चों को कुछ नहीं मिलता तो बच्चे लकड़ी या प्लास्टिक के टुकड़े, कटोरी और ढक्कन, प्लास्टिक की बोतल के आदि को खिलौने के रूप में इस्तेमाल कर खेलने लगते हैं।

माता-पिता को बच्चों के नैसर्गिक विकास का हमेशा खयाल रखना चाहिए। बच्चों के जन्म के बाद शुरुआती कुछ महीने उनके विकास में सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। इस दौरान बच्चों के लिए खिलौनों का सहारा लेना चाहिए। इससे बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

ज्ञानवर्धक खिलौनों के साथ खेलकर बच्चों की समझ बढ़ती है और दूसरों पर उनकी निर्भरता कम होने लगती है। बच्चे का शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास खिलौनों पर भी टिका होता है। लोग बच्चों को खिलौने उपहार में भी देते हैं। खेल बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग है। चाहे बच्चा पलंग पर लेटा हो या कहीं रास्ते में, खटोले में हो या गोद में, बच्चे के हाथ जो भी आता है वह उससे खेलना शुरू कर देता है। बच्चा जब थोड़ा बड़ा हो जाता है तो घर में जो कुछ भी उसके हाथ लगता है वह उसका खिलौना बनाकर खेलने लगता है।

पैदा होने के कुछ समय तक बच्चे अपने हाथों पैरों से खेलते हैं। इससे शिशु को अपने आसपास की वस्तुओं का पता चलता है। ऐसे अनुभवों से उनकी अपने बारे में धारणा विकसित होती है। खेल के दौरान बच्चे यह समझने लगते हैं कि रोने पर माँ उनके पास आएगी, जब वह हँसेंगे तो माँ उन्हें गोद में उठा लेगी। इन विभिन्न स्थितियों से जूझने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है। एक पालने में लेटे हुए बच्चे के सिर के ऊपर नाचने वाली वस्तुएँ उनकी दृष्टि को उत्तेजित करती हैं और ध्यान देने की अवधि विकसित करती हैं। जब बच्चा 6 महीने के आसपास की उम्र का होता है तो माता-पिता को उनके दाँत निकलने का इंतज़ार रहता है। जब बच्चे सात से आठ महीने के बीच के होते हैं तो उनके दाँत आने शुरू हो जाते हैं। दाँत निकलने से पूर्व ही बच्चों की पहुँच में जो भी चीज़ आती है, उसे वे अपने मुँह में डालने लगते हैं। *टीथिंग टॉयज* शिशुओं के लिए बहुत फ़ायदेमंद होते हैं। बस यह ध्यान रखना है कि ये हानिकारक रसायन के बने न हों, ताकि यदि बच्चे उनसे खेलते हुए मुँह में भी रख लें, तो कोई परेशानी न हो।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे अन्य बच्चों के साथ खेलने लगते हैं। जब शिशु लगभग 8 महीने का हो जाता है, तब वह घुटने के बल चलना शुरू कर देता है इसलिए मुलायम खिलौने और हल्के प्लास्टिक के खिलौने का उपयोग किया जाना चाहिए। 9 महीनों में, शिशुओं को विभिन्न आकृतियों, हल्की लकड़ी के क्यूब्स, बड़े छल्ले और लकड़ी के वाहनों के खिलौने दिए जा सकते हैं। जब शिशु लगभग 10 महीने का होता है, तो शिशु सहारे के साथ खड़ा होने लगता है और लगभग एक साल का होने पर बच्चे बिना किसी सहारे के खड़े होने लगते हैं (हालाँकि हर बच्चे की अपनी

विकासात्मक गति है)। शुरुआत में लोग बच्चों को वॉकर लाकर देते हैं। वॉकर अच्छा होता है, पर ज़रूरत से ज़्यादा वॉकर का प्रयोग बच्चों के चलने में देरी ला सकता है क्योंकि बच्चा इस पर निर्भर हो जाता है। इसके अलावा बहुत बार बच्चों को इससे चोट भी लग जाती है। माता-पिता को काफ़ी ध्यान रखना पड़ता है। जब बच्चे चलना शुरू कर देते हैं तो रस्सी से खींचने वाले खिलौने उन्हें पसंद आते हैं। इन खिलौनों का उपयोग माता-पिता के मार्गदर्शन में किया जाना चाहिए। बच्चों को जिन चीज़ों में दिलचस्पी होती है उन्हें उसी तरह के खिलौने देने चाहिए। उन्हें किचन सेट, डॉक्टर सेट, गुड़िया और उसके कपड़े, पपेट्स और सैंड एंड वाटर प्ले टॉयज दिए जा सकते हैं। बच्चों को बाहर घुमाने भी ले जाना चाहिए। इससे बच्चों को बाहर की हवा मिलती है और इससे बच्चे खुश और स्वस्थ रहते हैं।

छोटी वस्तुओं, कैंची और सुई जैसे तेज़ धार वाले उपकरणों को बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिए। *सॉफ़्ट टॉयज* और बैटरी वाले खिलौने देने से बचना चाहिए क्योंकि वे उन्हें मुँह में लेने लगते हैं। बच्चों के हाथ में मोबाइल फ़ोन कम से कम देना चाहिए। कई बार माता-पिता बच्चे को सिर्फ़ इसलिए अपना मोबाइल देते हैं, क्योंकि बच्चा रो रहा है या ज़िद्द कर रहा है; तो यह सही नहीं है। बच्चे को इसकी लत लग सकती है। यह सिरदर्द और मोटापे जैसी स्वास्थ्य समस्याओं की वजह बन सकता है। इससे आँखें कमज़ोर हो सकती हैं। इसके साथ ही यह बच्चे को चिड़चिड़ा, आक्रामक और हिंसक भी बना सकता है।

जब बच्चा लगभग 3 वर्ष का हो जाता है, तब उसकी उम्र के अनुरूप साइकिल ले कर देना अच्छा है। ये बच्चे के स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। इससे बच्चों की बड़ी माँसपेशियों का विकास होता है। इस

बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि बच्चा साइकिल माता-पिता की देखरेख में ही चलाए। इस उम्र में बच्चों को ड्राइंग बुक के साथ मोटी पेंसिल या क्रेयॉन दिए जा सकते हैं। रंगीन गेंद से बच्चों की छोटी बड़ी मॉसपेशियाँ विकसित होती हैं। खिलौने पर नंबर और जानवरों के चित्र बनाए जाते हैं जो प्रारंभिक शिक्षा में मदद कर सकते हैं और साथ ही सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। कठपुतली का खेल बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को कठपुतली का खेल रुचिकर लगता है, क्योंकि कोई भी हिलती-डुलती चीज ध्यान सहज ही अपनी ओर खींच लेती है। इससे बच्चों का मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही वे उससे बातचीत करना भी सीख जाते हैं।

बच्चे के जीवन के पहले 5 साल में उनका मस्तिष्क बहुत ही तीव्र गति से विकसित होता है, वे कुछ भी सीख सकते हैं। बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास इन्हीं शुरुआती वर्षों में हो जाता है। खिलौने के रंग और आकर्षक बनावट छोटे बच्चों का दिल जीत लेते हैं। खिलौने बच्चों के नन्हे-नन्हे हाथों में आसानी से आ जाएँ और उनका ध्यान आकर्षित कर सकें साथ ही बच्चे उनसे आसानी से पढ़ना-लिखना सीख सकें, यही कोशिश होनी चाहिए। बच्चों को पानी में खेलते समय वे खिलौनों जो पानी में तैरते हैं, बहुत पसंद आते हैं।

बच्चों को शीशा बहुत पसंद होता है। शिशु दर्पण में अपने बदलते चेहरे और भावों को देख कर खुश होते हैं। वे स्वयं के बारे में जागरूक हो जाते हैं, जैसे— शरीर के अंगों के बारे में, भावों के बारे में आदि। खिलौनों से खेलने से बच्चों को बहुत फ़ायदे होते हैं, जैसे— नए विषय वस्तु की समझ, जिज्ञासा

का जन्म, मनोरंजन, नए दोस्तों के साथ मेलमिलाप, समय का सदुपयोग इत्यादि।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं खिलौने

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा या ईसीसीई का उद्देश्य जन्म से 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों की समग्र रूप से वृद्धि, विकास और उनके शिक्षण को प्रोत्साहित करना है। 'देखभाल' का अर्थ है— बच्चों के लिए एक देखरेख पूर्ण और सुरक्षित परिवेश उपलब्ध कराते हुए उसके स्वास्थ्य, साफ़-सफ़ाई और पोषण पर ध्यान देना। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आरंभिक 6 वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता है। इन वर्षों में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा शुरू हो जाती है। बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में खेल-खिलौनों का बहुत योगदान होता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल या ईसीसीई शिक्षा केंद्रों में बहुत सारे खिलौने होते हैं। यह खिलौने बच्चों को अपना परिवेश समझने में मदद करते हैं और उनमें भाषायी विकास, संज्ञानात्मक विकसित करते हैं। इसके साथ ही उन्हें पढ़ने-लिखने के लिए तैयार करते हैं। आकलन और मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य बच्चे के सीखने में सुधार लाना है ताकि वे प्रगति कर सकें और उनका संपूर्ण विकास हो सके।

सीखने-सिखाने के दौरान किए गए आकलन से उनके बारे में एकत्र की गई जानकारी शिक्षक को किसी भी विषय में बच्चे की क्षमताओं और सीखने में कमी की पहचान करने में सहायक होती है। यह शिक्षकों को पाठ्यक्रम व सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बच्चों की ज़रूरतों के अनुसार ढालने में मदद करती है।

इसके साथ ही यह भी दर्शाने में सहायक सिद्ध होती है कि बच्चों ने पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को किस सीमा तक प्राप्त किया है। खिलौने भी ये जाँचने में सहायक हैं कि बच्चे रंग, आकार, विषयवस्तु को समझ रहे हैं या नहीं। उनमें कोई शारीरिक या बौद्धिक विषमता तो नहीं है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सुलभ नहीं है।

ईसीसीई लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और खोज-आधारित शिक्षा है। इसमें अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियाँ शामिल होने के साथ-साथ अन्य गुणों, जैसे— सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता है। ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

बाल्यावस्था की शिक्षा समृद्ध होनी चाहिए। इसमें स्थानीय कला, कहानियाँ, कविता, खेल, गीत और बहुत कुछ शामिल होना चाहिए। खेलना बच्चों को बहुत पसंद होता है, खेल उनके लिए आनंद का

स्रोत होते हैं। खेल, शिक्षा का एक सशक्त साधन है। खेल द्वारा बच्चों का शारीरिक विकास तो होता ही है साथ ही उनके मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा भाषायी कौशल के विकास में भी खेलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। खेलों के माध्यम से बच्चों में बहुत से मानवीय गुणों, जैसे— अनुशासन, समयानुपालन, पारस्परिक सहयोग, त्याग, पहल तथा नेतृत्व की भावना, अपनी बारी की प्रतीक्षा इत्यादि का विकास किया जा सकता है। खेलों में भाग लेने से बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास होता है। उनकी माँसपेशियों में संतुलन स्थापित होता है तथा स्फूर्ति एवं चुस्ती आती है। बच्चों के संवेगात्मक विकास में भी खेलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पराजय को शालीनता के साथ स्वीकार करना तथा टीम के हितों के लिए निजी हितों का बलिदान करना आदि। बच्चे खेलों के माध्यम से सीख लेते हैं। बच्चों की दबी हुई भावनाओं को बाहर निकालने में भी खेल सहायक सिद्ध होते हैं। इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया में खेल प्रेरक शक्ति का कार्य करते हैं। (पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या, 2019)

प्रारंभिक शिक्षा (3–8 साल) में बच्चों को मुक्त और निर्देशित खेलों के दौरान विविध प्रकार की सामग्री और वस्तुओं से परस्पर संवाद करने के अवसर प्राप्त होते हैं। हमें यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सामग्री या वस्तुएँ बच्चों की आयु व विकासात्मक स्तर के अनुरूप हैं या नहीं। खेल सामग्री दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खेलने और परस्पर संवाद करने, समाधान खोजने और नवाचार करने के अवसर देने वाली होनी चाहिए। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में जो गतिविधि क्षेत्र होते हैं उनमें इस प्रकार की खेल सामग्री होनी चाहिए, जैसे— क्रेयॉन, गड़िया, बनावटी फल

एवं सब्जियाँ, ब्लॉक, पज़ल, मनके मोती, मापक कप और चम्मचें, वर्ग (क्यूब), बटन, मापक फीता, वजन मापने वाला यंत्र, डॉक्टर सैट, परिधान संबंधी सामग्री (सजने-सँवरने का सामान), पुस्तकें, मिट्टी आदि। इस प्रकार की सामग्री बच्चों को अभिनय वाले खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर खेल सामग्री या गतिविधि क्षेत्रों के माध्यम से बच्चों को पढ़ने लिखने के लिए तैयार करते हैं। ये क्रियाएँ बच्चों में सीखने की नींव को सुदृढ़ करती हैं जो आगे जाकर बच्चों को विभिन्न विषय पढ़ने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष

बच्चे अपने परिवेश के साथ सतत रूप से परस्पर संवाद करते रहते हैं। वे जिस चीज़ को भी देखते हैं, उसे छूने की अदम्य लालसा उनमें होती है। वे उसी वस्तु से खेलने लगते हैं और खेलते-खेलते सीखते हैं। खिलौने बच्चों को बहुत प्रिय होते हैं। विविध प्रकार

की खेल सामग्री और गतिविधियों के माध्यम से बच्चे वस्तुओं को जोड़-तोड़ करके, प्रष्ट पूछकर, अनुमान लगाकर, सामान्यीकरण करके, भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश का अन्वेषण करके सीखते हैं और साथ ही उनका सामाजीकरण भी होता है। धीरे-धीरे बच्चे स्कूल के साथ-साथ घर या समाज में पढ़ते-बढ़ते चले जाते हैं। सीखने का परिवेश इस प्रकार का होना चाहिए जो उन्हें सीखने की ओर लालायित करे, सुरक्षित हो और अनुमान लगाने के मौके देता हो और पढ़-लिख कर समाज का अच्छा नागरिक बनने में मदद करे। बच्चों के सर्वांगीण विकास में खिलौने माध्यम बन जाते हैं। अतः इनका प्रयोग करना चाहिए। बच्चों को भी खिलौने बनाने के अवसर देना चाहिए इससे बच्चों को बहुत सीखने को मिलता है, जैसे— समस्या हल करना, निर्णय करना इत्यादि। अतः बच्चों को खिलौने बनाने और उनसे खेलने के भरपूर अवसर मिलने चाहिए।

संदर्भ

- भारत सरकार. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 27 सितंबर, 2013. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा (ईसीसीई) नीति 2013*, नयी दिल्ली.
- रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- .2019. *पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या-2019*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.